>

Title: Need to open libraries in villages.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदया, अभी-अभी दिल्ली में पुस्तक मेला बहुत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, कोलकाता का पुस्तक मेला सफल, पटना में भी सफल, गया में सफल, देवघर में श्री दुबे जी यहां बैठे हुए हैं, वहां भी पुस्तक मेला भारी सफल हुआ। पुस्तक मेला में लोगों की भागादारी, पुस्तकों की खरीददारी और लोगों के उत्साह से ऐसा लगता है कि पुस्तक पढ़ने की संस्कृति का विकास हो रहा है, लेकिन देश के ज्यादातर गांवों में पुस्तकालय नहीं हैं। राज्य सरकार हो या भारत सरकार हो, पुस्तकालय की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रही है, सबसे उपेक्षित इलाका आज पुस्तकालय हो गया है। या तो पुस्तकालय नहीं हैं, अगर हैं भी तो वह मृतप्राय हैं, जीर्णशीर्ण हैं, इनकी कोई देखभाल सरकार की ओर से नहीं है। यह ठीक बात है कि इंटरनेट में और डिजिटल में संपूर्ण ज्ञान का भंडार पड़ा हुआ है, लेकिन इंटरनेट पुस्तकालय का विकल्प नहीं हो सकता है। जो पुस्तक है, उसे पढ़ने की जो हमारी संस्कृति है, किताब पढ़ते-पढ़ते पुस्तक को छाती पर रखकर नींद आ जाना और सो जाना, यह संस्कृति और यह मजा डिजिटल और इंटरनेट से नहीं आ सकता।

महोदया, बिहार में तो बहुत खराब स्थिति है। हर जगह मदिरालय, मदिरालय, बहुत सी शराब की दुकानें खुलवा दी हैं। महिलायें आन्दोलन कर रही हैं कि शराब की दुकान बंद करो, नौजवानों की तरफ से यह कहा गया कि मदिरालय नहीं पुस्तकालय चाहिए, शराब नहीं किताब चाहिए। इस आंदोलन की शुरूआत हो गयी है कि मदिरालय के बदले पुस्तकालय और शराब के बदले किताब, शराब नहीं किताब चाहिए, मदिरालय नहीं पुस्तकालय चाहिए।

मैं भारत सरकार से आग्रह करता हूं कि यह पुस्तकालय आंदोलन और पुस्तक पढ़ने की संस्कृति में, कहां है नॉलेज कमीशन, कहां हैं सैम पित्रोदा?...(व्यवधान) नॉलेज कमीशन ने कहा था कि पुस्तकालय आंदोलन की तरफ भारत सरकार का ध्यान है, लेकिन क्या हो रहा है?...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त कीजिये।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : इसलिए राज्य सरकार, भारत सरकार इस बात पर ध्यान दे कि पुस्तक पढ़ने की संस्कृति का विकास किया जाये, पुस्तकालय आंदोलन चलाया जाये। किताब चाहिए, शराब नहीं, मदिरालय नहीं, पुस्तकालय चाहिए, यह आंदोलन देश भर में चले तो हिन्दुस्तान ज्ञान के मामले में दुनिया में नंबर एक पर रहेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

अध्यक्ष महोदया :

श्री उमाशंकर सिंह,

श्री प्रेमदास,

श्री ओम प्रकाश यादव,

डॉ. तरुण मंडल,

डॉ. अनूप कुमार साहा,

श्रीमती सुस्मिता बाउरी,

श्री पुलीन बिहारी बासके,

श्री बंस गोपाल चौधरी,

श्री शैलेन्द्र कुमार,

श्री अर्जुन राम मेघवाल,

श्री राजेन्द्र अग्रवाल,

श्री नीरज शेखर और

श्री धनंजय सिंह अपने आपको डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह जी के विषय के साथ सम्बद्ध करते हैं।